श्रीश्रीजगन्नाथदेव की स्नानयात्रा

श्रीश्रीमाँ सर्वाणी

ज्येष्ठ महिने की पूर्णिमा तिथि में श्रीश्रीजगन्नाथदेव का स्नानयात्रा महामहोत्सव श्रीक्षेत्र में अनुष्ठित होता है। पुराण में श्रीपुरूषोत्तमक्षेत्र-माहात्मय में श्रीभगवान जगदीश ने कहा है, ''स्वायं भूव-मनु के सत्यादि चतुर्युग के द्वितीयांश में एवं सत्ययुग के भगवद्दर्शनप्रद प्रथमांश में स्वायं भूव-मनु के यज्ञ प्रभाव से ही श्री भगवान का आविर्भाव हुआ। श्रीश्रीपुरूषोत्तम जगदीश ज्यैष्ठ-पूर्णिमा तिथि के शुभक्षण में धराधाम में अवतीर्ण हुए थे। अत: यह दिवस श्री जगदीश के पूण्य जन्म दिवस के रूप में विख्यात है। उनकी ही आज्ञानुसार इस दिवस में श्री जगदीश पुरूषोत्तम का अधिवास-पूर:सर महास्नान विधानानुसार महासमारोह से स्नानवेदी के ऊपर उनका पूण्य स्नान सेवा आयोजित होता है।

इस समय श्रीश्रीजगन्नाथ, श्रीश्रीबचदेव व सुभद्रादेवी स्नानवेदी पर ''पहन्डी विजय'' करते हैं एवं वहाँ सुदर्शन के सहित श्रीबिग्रहत्रय को अष्टोत्तर सत स्वर्ण पुर्णकुम्भ सुशीतल जल में महास्नान पर्व सम्पन्न किया जाता है। स्नानान्तर श्रीभगवान गणेश रूप धारण करते हैं। समग्र ब्रह्मर्षिगण एवं समुदय देवतागण श्रीजगदीश को महास्नान कराने के लिए पारिजात सुवासित सुरतरंगिणी का पवित्र जल मस्तक पर वहन करते हुए ब्रह्माजी के सहित श्रीपुरूषोत्तम धाम में आते हैं एवं ब्रह्माजी के आनुगत्य से वे मंचस्थ श्रीभगवान को स्नान कराते हैं एवं विराट प्रभु की स्तव-स्तुति द्वारा वंदना करते हैं। देवतागण स्वच्छन्द से विराजमान होकर श्री भगवान की स्नानयात्रा का दर्शन कर सकें, इस उद्देश्य से महा भागवत राजा इन्द्रद्युम्न ने स्नानयात्रा काल में स्नानवेदी के पार्श्ववर्ती स्नानादि समुह को चंद्रातप शोभित एवं मस्तकमणि जड़ित सुविस्तृत आवरण वस्त्र द्वारा आच्छादित किया। स्नानयात्रा दिवस में श्रीजगदीश का स्नानमंच नानाबिध मणि, मुक्ता, माला, चामर, पताका व तोरणादि द्वारा सुसज्जित किया जाता है तथा चंदन मिश्रित सुगन्ध एवं सुशीतल पवित्र जल व सुगन्धित धुपादि द्वारा सुरभित किया जाता है। इसके बाद श्रीश्रीजगन्नाथ के सेवकगण दक्षिण दिग्वर्ती कूप से स्नान के जल को उत्तोलनपूर्वक सुगन्धि द्रव्य द्वारा सुवासित कर ''पावमानी'' मंत्रोच्चारण करते-करते स्वर्णकलस को परिपूर्ण करत: शास्त्रोक्त विधानानुसार मन्दिर के अभ्यंतर में श्री भगवान का अधिवास करते हैं। तदनन्तर श्री विग्रहत्रय को पट्टवस्त्रादि द्वारा आच्छादन पूर्वक श्री सुदर्शन के साथ स्नान मंच पर ले जाया जाता है।

महा भागवत राजा इन्द्रद्युम्न को श्री जगदीश ने कहा था, ''सिन्धुकुल में जो अक्षय वट है, उसके उत्तर दिशा में सर्वतीर्थमय एक कूप विराजित है किन्तु अभी वह बालुराशि द्वारा आवृत है। स्नानार्थ के पूर्व में उस कूप को पुन: निर्माण करवाकर तत्पश्चात् मैं अवतीर्ण हुआ हूँ। अतएव उस कूप को आविस्कृत कर यथाविधान से बलिदानपूर्वक शंख, काहाल, मुरजादि वाद्ययंत्र वादित कर चतुर्दशी में उस कूप का संस्कार करना होगा। द्विजगण स्वर्णकुम्भ द्वारा उस सर्वतीर्थमय कूप से पवित्र जल को उत्तोलन कर ज्यैष्ठी पूर्णिमा में प्रात:काल में ब्रह्माजी के सहित श्री जगदीश, श्री बलभद्र व श्री सुभद्रादेवी का स्नान सेवा करना होगा।'' महाभागवत राजा इन्द्रद्युम्न को साक्षात् भगवान द्वारा दिए गए आदेशानुसार आज भी पुरूषोत्तम में उसी प्रकार से श्री स्नान यात्रा अनुष्ठित होती है।

राजन् के प्रति श्री भगवान का यह आदेश था कि महास्नान के पश्चात् पंच दिवस (अनवसरकाल) श्री जगदीश का अंगराग विहीन विरूपावस्था में कोई कदाचित् दर्शन नहीं करेगा। इस कारण श्री जगदीश के आज्ञानुसार इस पंचदिवसकाल श्री मन्दिर का द्वार बन्द रहता है।

स्नानयात्रा के समय स्नात हो कर श्री जगन्नाथदेव नरलीला माधुर्य विस्तार करने के लिए ज्वरलीला को प्रकट करते हैं। दयितापतिगण श्री श्री जगन्नाथ को ज्वर हुआ है ऐसा कहकर ''पाचन'' (मिष्टरस का शरबत विशेष है) भोग प्रदान करते हैं एवं पंचदिवस अनवसरकाल में प्रत्यह मिष्टान्नादि भोग निवेदन करते हैं।

हिन्दी अनुवाद : **मातृचरणाश्रिता—श्रीमती ज्योति पारेख**

बीतराग

तन्हाई वो जो प्रभु संग प्रित बढ़ा दे ,
प्रित ऐसी कर जो प्रभु संग मित करा दे।
मित संग प्रित ऐसी कर कि,
फिर विरह न होने पाए॥
जय श्री राम!!

मातृचरणाश्रित—मोहित शुक्ल

अनुष्ठान सुची

गुरू पूर्णिमा—१८ जुलाई, शुक्रवार
जन्माष्टमी—२४ अगस्त, रविवार
महालया—२९ सितम्बर, सोमवार
नवरात्रि पूजा—३० सितम्बर-९ अक्टूबर
(पूजा कार्यक्रम विशुद्धसिद्धांत पंचांग के अनुसार)